

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय



स्वच्छ परिसर, शून्य अपशिष्ट: स्वास्थ्य सेवा के लिए स्मार्ट स्वच्छता

प्रविष्टि तिथि: 22 APR 2026 11:09AM by PIB Delhi



स्वच्छ भारत मिशन अर्बन 2.0 के तहत, एक अग्रणी पहल के माध्यम से एक प्रमुख स्वास्थ्य सेवा संस्थान को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के एक आदर्श में परिवर्तित किया जा रहा है, क्योंकि यह संस्थान कचरे को लैंडफिल में जाने से रोकने के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर रहा है।

सतत शहरी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, दिल्ली नगर निगम के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय क्षय रोग एवं श्वसन रोग संस्थान (एनआईटीआरडी) को आधिकारिक तौर पर 'शून्य अपशिष्ट भूमि उपयोग' संस्थान के रूप में मान्यता दी गई है। यह उपलब्धि भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जिम्मेदार और पर्यावरण के प्रति जागरूक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एनआईटीआरडी को एक मिसाल के तौर पर स्थापित करती है। यह पहल 'व्हाई वेस्ट वेडनेसडे' फाउंडेशन द्वारा अपने प्रमुख कार्यक्रम 'स्वच्छ संकल्प' के माध्यम से कार्यान्वित की गई, जो यह दर्शाता है कि सुनियोजित योजना और सामूहिक प्रयास किस प्रकार सार्थक परिवर्तन ला सकते हैं।



27 एकड़ के विशाल परिसर में फैला राष्ट्रीय क्षय रोग एवं श्वसन रोग संस्थान (एनआईटीआरडी) प्रतिदिन लगभग 1 से 1.2 टन अपशिष्ट उत्पन्न करता है, जिसमें 500-650 किलोग्राम गीला अपशिष्ट शामिल है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्यरत यह संस्थान, 2026 के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन दिशानिर्देशों के अंतर्गत थोक अपशिष्ट उत्पादक श्रेणी में पूर्ण अनुपालन प्राप्त करने वाला एक स्वास्थ्य संस्थान बनकर उभरा है। यह मान्यता सतत प्रथाओं के प्रति एनआईटीआरडी की अग्रणी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है और भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक मानक स्थापित करती है।

इस परियोजना ने सतत अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण अपनाया। इसकी शुरुआत एक गहन अपशिष्ट लेखा परीक्षण और आधारभूत सर्वेक्षण से हुई, जिसका उद्देश्य सभी मौजूदा अपशिष्ट स्रोतों का मानचित्रण करना, वर्तमान प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करना और संचालन में महत्वपूर्ण कमियों की पहचान करना था। इस नैदानिक चरण से संस्थान के अपशिष्ट उत्पादन के ढंग की स्पष्ट समझ प्राप्त हुई और लक्षित हस्तक्षेपों की योजना बनाने में सहायता मिली। इन जानकारियों के आधार पर, इस पहल ने एक गहन जागरूकता और क्षमता-निर्माण अभियान शुरू किया, जिसके तहत अस्पताल के कर्मचारियों, प्रशासकों और सहायक कर्मियों के लिए लगभग 50 विशेष सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों ने न केवल प्रतिभागियों को अपशिष्ट पृथक्करण, पुनर्चक्रण और खाद बनाने की सर्वोत्तम प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित किया, बल्कि जवाबदेही और पर्यावरणीय जिम्मेदारी की संस्कृति को भी

बढ़ावा दिया। संस्थान के सभी स्तरों पर सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करके, कार्यक्रम ने व्यापक सहभागिता हासिल की, मापने योग्य व्यवहार परिवर्तन को प्रेरित किया और शून्य-अपशिष्ट पहल की दीर्घकालिक सफलता की नींव रखी।



इस मजबूत आधार पर आगे बढ़ते हुए, परियोजना ने कचरे के प्रभावी और टिकाऊ प्रबंधन के लिए एक सुदृढ़ जमीनी बुनियादी ढांचा स्थापित किया। जैव अपघटनीय कचरे के प्रसंस्करण के लिए एक गीले कचरे के खाद केंद्र की स्थापना की गई है, जबकि पुनर्चक्रण योग्य सामग्रियों के कुशल छँटाई, एकत्रीकरण और प्रबंधन के लिए एक सूखे कचरे के संसाधन केंद्र को मजबूत किया गया है, जिससे अधिकतम पुनर्प्राप्ति और लैंडफिल से कचरे का स्थानांतरण सुनिश्चित हो सके। बागवानी और भूनिर्माण से उत्पन्न अवशेषों के प्रबंधन के लिए समर्पित बागवानी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली भी लागू की गई है, जिससे परिसर में उत्पन्न होने वाले हर प्रकार के कचरे का कुशल प्रसंस्करण सुनिश्चित हो सके।



संस्थान की अपशिष्ट प्रसंस्करण क्षमता को और बढ़ाने के लिए, परिसर में रणनीतिक रूप से 40 गाईया कम्पोस्टिंग बिन स्थापित किए गए हैं, साथ ही बड़े हरे अपशिष्ट पदार्थों के उपचार को सुव्यवस्थित करने के लिए दो बागवानी अपशिष्ट श्रेडर भी लगाए गए हैं। इसके अतिरिक्त, वास्तविक समय में संचालन की निगरानी के लिए एक समर्पित निगरानी केंद्र स्थापित किया गया है, जिसे संसाधनों के उपयोग को ट्रैक करने, प्रबंधित करने और अनुकूलित करने के लिए एक उपभोग्य सामग्री प्रबंधन स्थान द्वारा समर्थित किया गया है। ये सभी अवसंरचना घटक मिलकर एक निर्बाध, एकीकृत प्रणाली का निर्माण करते हैं जो न केवल परिचालन दक्षता सुनिश्चित करती है बल्कि एनआईटीआरडी के शून्य-अपशिष्ट इकोसिस्टम की दीर्घकालिक स्थिरता की भी गारंटी देती है, जिससे अन्य स्वास्थ्य संस्थानों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल स्थापित होता है।



दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की दक्षिण जोन टीम ने महारौली वार्ड में स्थित राष्ट्रीय क्षय रोग एवं श्वसन रोग संस्थान में 40 एरोबिन कंपोस्टिंग इकाइयों का उद्घाटन किया।

यह उपलब्धि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार प्रथाओं को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों को निरंतर जागरूकता कार्यक्रमों, कर्मचारियों के प्रशिक्षण और रणनीतिक रूप से विकसित बुनियादी ढांचे के साथ सहजता से एकीकृत करके, एनआईटीआरडी ने यह प्रदर्शित किया है कि बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य सेवा संस्थान दक्षता या रोगी देखभाल से समझौता किए बिना स्थायी रूप से कैसे संचालित हो सकते हैं।

अपनी परिचालनात्मक सफलता के अलावा, यह उपलब्धि एक राष्ट्रीय मानक स्थापित करती है, जो देश भर के अन्य अस्पतालों और स्वास्थ्य सुविधाओं को यह दर्शाती है कि शून्य-अपशिष्ट प्रथाएं व्यवहार्य और प्रभावशाली दोनों हैं। स्वच्छ भारत मिशन अर्बन 2.0 के तहत एनआईटीआरडी की यह पहल इस बात का एक सशक्त उदाहरण है कि कैसे सामूहिक प्रयास, दूरदर्शी नेतृत्व और सुनियोजित, संरचित कार्यान्वयन से व्यवस्थागत परिवर्तन लाया जा सकता है। यह स्थिरता के प्रति संस्थागत प्रतिबद्धता की शक्ति को रेखांकित करती है, जो देश भर में स्वास्थ्य सेवा और शहरी विकास के लिए एक स्वच्छ, हरित और अधिक जिम्मेदार भविष्य को प्रेरित करती है।

पीके/केसी/एमके/वाईबी

(रिलीज़ आईडी: 2254450) आगंतुक पटल : 322

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Punjabi